स्नातक–हिन्दी (प्रतिष्ठा) – द्वितीय खण्ड

चतुर्थ पत्र – छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

समकालीन हिन्दी – मुक्तिबोध

– डॉ॰ मुन्ना साह

मुक्तिबोध का पूरा नाम – गजानन माधव मुक्तिबोध है। मुक्तिबोध 'तार सप्तक' के कवियों में प्रथम स्थान पर आते हैं। 'तार सप्तक' अज्ञेय की संपादित पुस्तक है, जिसका प्रकाशन सन् 1943 ई. में हुआ था। 'तार सप्तक' में सात कवियों की कविताएँ संग्रहित हैं। मुक्तिबोध का जन्म नवम्बर 1917 ई. में ग्वालियर के कसबे में हुआ था। उन्होंने सन् 1935 ई. में माधव कॉलेज, उज्जैन में साहित्य लेखन कार्य आरम्भ किया था। सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को अभिव्यक्ति देने के कारण उन्हें प्रगतिवादी कवियों की श्रेणी में रखा जाता है। मुक्तिबोध का काव्य संग्रह 'चाँद का मुहँ टेढ़ा है' प्रकाशित है। जिसमें 28 कविताएँ – आत्मा के मित्त मेरे, दूर तारा, खोल आँखें , अशक्त, मेरे अन्तर, मृत्यु और कवि, नूतन अहं, विहार, पूँजीवादी समाज के प्रति, नाश देवता, सृजन–क्षण, अन्तर्दर्शन, आत्म संवाद, व्यक्तित्व और खँडहर, मैं उनका ही होता, हे महान्!, पुनश्च, एक आत्म वक्तव्य इत्यादि।

मुक्तिबोध की सबसे बड़ी शक्ति है – सामाजिक चिन्तन बोध और जनजीवन में विश्वास। उनकी काव्यगत अभिव्यक्ति स्वयं की अनुभूति है। उनके समाज बोध की अभिव्यक्ति को निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं –

1. व्यक्तिवादी मनोवृत्ति

मुक्तिबोध ने मानव की समस्त दुर्बलताओं का चित्रण अपने काव्य में किया है। इस संदर्भ में मुक्तिबोध की कविता 'व्यक्तित्व और खँडहर' की पंक्तियों को देख सकते हैं –

"दब चुकी जो मर चुकी है आत्मा,
खत्म जो हो ही गयी आकांक्षा
व्यक्ति में व्यक्तित्व के खण्डहर

गान कर उठते उसी के गीत।"

यह विकेन्द्रित व्यक्तित्व, यानी व्यक्तित्व का खँडहर किसी अबूझे समय में अपने गत वैभव पर रो उठता है।

2. सामाजिक पीड़ा

मुक्तिबोध को लगता है कि प्रत्येक व्यक्ति की पीड़ा पर महाकाव्य लिखा जा सकता है। वे लिखते हैं –

"मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है।
हर एक छाती में विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है।"

मुक्तिबोध का आत्म संघर्ष ही उनकी सामाजिक दृष्टि का संस्कार है।

3. शोषण का विरोध

मुक्तिबोध अपनी कविता में शोषण के प्रति चिंतित नजर आते हैं। सर्वहारा वर्ग के प्रति अधिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। वे एक शोषण मुक्त समाज की परिकल्पना करते हैं। वे लिखते हैं –

"समस्या एक
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव
सुखी, सुन्दर व शोषण मुक्त
कब होंगे ?"

4. गरीबों के पक्षधर

मुक्तिबोध की कविताओं में जनसाधारण का चित्रण अधिक मिलता है। गरीब दलित बस्ती, लकड़ी बिनती स्त्रियां, सभ्यता का नकाब ओढ़े विकृत जिन्दगी, व्यथित करने वाले लोगों का दृश्य उनकी कविताओं में मिलते हैं। वे इस संदर्भ में लिखते हैं –

"झरने के तट पर रोता है कोई बालक

अंधियारे में काले सियार से घूम रहे

मैदान सूंघते हुए हवाओं के झोंके

झरने के पथरीले तट पर

सो चुका, अरे, किन–किन करके, कुछ रो–रो के

चिथड़ा में सद्योजात एक बालक सुन्दर।"

5. पूँजीपतियों की आलोचना

मुक्तिबोध की दृष्टि में पूँजीपति ही शोषणहीन समाज की स्थापना में बाधक हैं। उनका कहना है कि –

"वर्तमान समाज में चल नहीं सकता

पूँजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता

स्वातंत्र्य व्यक्ति का वादी

छल नहीं सकता मुक्त व्यक्ति को।"

वस्तुतः मुक्तिबोध एक यथार्थवादी कवि हैं। उन्होंने यथार्थ को जिया, भोगा और यथार्थ को ही लिखा है।

———————————————•••———————————————